अध्याय 1. संसाधन एवं विकास

प्रश्न – संसाधन किसे कहते हैं ?
उत्तर – वे सभी वस्तुएं जिनका उपयोग मनुष्य अपनी लाभ के लिए करता हैं, संसाधन कहलाते हैं।
प्रश्न – संसाधनों का वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता हैं ?
उत्तर – संसाधनों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता हैं :

1. उत्पत्ति के आधार पर
2. समाप्यता के आधार पर
3. स्वामित्य के आधार पर
4. विकास के आधार पर

प्रश्न – उत्पत्ति के आधार पर संसाधन कितने प्रकार के होते हैं ।
उत्तर – उत्पत्ति के आधार पर संसाधन दो प्रकार के होते हैं :–
1. जैव संसाधन – वे संसाधन जिनकी प्राप्ति जीवमंडल से होती हैं और इनमे जीवन व्याप्त होते हैं । ऐसे संसाधनों को जैव संसाधन कहते हैं । उदाहरण :– मनुष्य, वनस्पति जगत, मत्स्य जीवन , पशु जीवन आदि ।
2. अजैव संसाधन – ऐसे संसाधन जो **निर्जीव** वस्तुओं से बने हैं , अजैव संसाधन कहलाते हैं । उदाहरण :–चट्टाने और धातुएं ।
प्रश्न – समाप्यता के आधार पर संसाधन कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर – समाप्यता के आधार पर संसाधन दो प्रकार के होते हैं :–

1. **नवीकरण योग्य संसाधन –** वे संसाधन जिन्हे भौतिक या रासायनिक या यांत्रिक प्रक्रियाओं दृवारा उत्पन्न किया जाता हैं, उन्हें नवीकरण योग्य संसाधन कहते है। उदाहरण :– पवन , सौर ऊर्जा , जल , वन व वन्य जीवन ।
2. **अनवीकरण योग्य संसाधन –** वे संसाधन जो एक बार समाप्त होने के बाद दुबारा नहीं बनाए जा सकते हैं । ऐसे संसाधन को अनवीकरण योग्य संसाधन कहते है । उदाहरण :– कोयला , गैस , पेट्रोलियम पदार्थ आदि ।

प्रश्न – स्वामित्य के आधार पर संसाधन कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर – स्वामित्य के आधार पर संसाधन चार प्रकार के होते है :–

1. **व्यक्तिगत संसाधन –** वे संसाधन जो मनुष्य के अपने निजी होते हैं , उन्हें व्यक्तिगत संसाधन कहते हैं ।
2. **सामुदायिक स्वामित्य वाले संसाधन –** वे संसाधन जो समुदाय के सभी सदस्यों को उपलब्ध होते हैं , उन्हें सामुदायिक स्वामित्य वाले संसाधन कहते है। उदाहरण :– तालाब, पिकनिक स्थल , सार्वजनिक पार्क आदि ।
3. **राष्ट्रीय संसाधन –** वे संसाधन जो तकनीकी तौर पर देश में पाये जाते हैं , उन्हें राष्ट्रीय संसाधन कहते है। उदाहरण :– वन , वन्य जीवन , खनिज पदार्थ , जल संसाधन आदि राष्ट्रीय संसाधन हैं ।
4. **अंर्तराष्ट्रीय संसाधन –** वे संसाधन जिनका उपयोग कुछ अंर्तराष्ट्रीय संस्थाएं करती है। उन्हें अंर्तराष्ट्रीय संसाधन कहते हैं ।

प्रश्न – विकास के आधार पर संसाधन कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर – विकास के आधार पर संसाधन चार प्रकार के होते हैं :–
1. संभावी संसाधन – वे संसाधन जो किसी प्रदेश में विद्यमान होते हैं परंतु इनका उपयोग नहीं किया गया हों। ऐसे संसाधनों को संभावी संसाधन कहते हैं । उदाहरण के तौर पर भारत के पश्चिमी भाग , विशेषकर राजस्थान और गुजरात में पवन और सौर ऊर्जा संसाधनों की अपार संभावना हैं, परंतु इनका सही ढंग से विकास नहीं हुआ हैं ।
2. वकसित संसाधन – वे संसाधन जिनका सर्वेक्षण किया जा चुका हो और उनके उपयोग की गुणवत्ता और मात्रा निर्धारित की जा चुकी हो । ऐसे संसाधनों को विकसित संसाधन कहते है।
3. भंडार – पर्यावरण में उपलब्ध वे पदार्थ जो मानव की आवश्यकताओ की पूर्ति कर सकते हैं परंतु उपयुक्त प्रौद्योगिकी के अभाव में उसकी पहुँच से बाहर हैं, भंउार में शामिल हैं।
4. संचित कोष – वे संसाधन जिनका उपयोग भविष्य में आवश्यकता, पूर्ति के लिए किया जा सकता हैं । ऐसे संसाधनो को संचित कोष संसाधन कहते हैं ।

प्रश्न – कब और क्यों रियों डी जेनरो का पृथ्वी सम्मलेन हुआ ?
उत्तर – रियों डी जेनरो का पृथ्वी सम्मलेन 1992 ई0 में ब्रजील के शहर रियों डी जेनरो में हुआ ताकि विश्व भर के सतत् पोषणीय विकास के लिए 21 वीं शताब्दी को ध्यान में रखते हुए सोच विचार किया जा सके । इसमें यह तय हुआ कि समान हितों पारस्परिक आवश्यकताओं तथा सम्मिलित जमीदारों के अनुसार विश्व सहयोंग के दृवारा कैसे पर्यावरणीय क्षति , गरीबी और रोगों से निपटा जाए ।

www.atpeducation.com

Downloaded from: http://www.atpeducation.com/cbse-download.php Email: atpeducations@gmail.com

प्रश्न – संसाधनों के अन्धाधुन्ध उपयोग से क्या समस्याएँ पैदा हो सकती हैं?
उत्तर – संसाधनों के अन्धाधुन्ध उपयोग से निम्नलिखित समस्याएँ पदा हो सकती हैं :–
1. पहली समस्या , संसाधनो के अन्धाधुन्ध उपयोग से हमारे संसाधन जल्दी जल्दी समाप्त होने लगेंगे ।
2. दूसरी समस्या , कुछ लोग अपने लालच के कारण समाज के कुछ वर्ग इन संसाधनो पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेंगें जबकि समाज में अन्य वग। उनके प्रयोग से वंचित रह जायेगे । इसका यह परिणाम होगा कि समाज दो वर्गों संसाधन समपन्न और संसाधनहीन या अमीर और गरीब वर्गों में बँट कर रह जाएगा ।
3. संसाधनों के अन्धाधुन्ध प्रयोग से कई विशिष्ट वैश्विक संकट पैदा हो जायेगें और पर्यावरण प्रदूषण , भूमि निम्नीकरण , भूमण्डलीय तापन का बढ़ना , ओजोन परत का गायब होते जाना। ये सभी चीजें मानव के विनाश का कारण बन सकती है।
प्रश्न – सतत् पोषणीय विकास का क्या अर्थ हैं ?
उत्तर – सतत् पोषणीय विकास का अर्थ हैं कि विकास पर्यावरण को बिना नुकसान पहुचाँए हो और वर्तमान विकास की प्रक्रिया भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की अवहलेना न करें ।
प्रश्न – एजेडा 21 क्या हैं ? इसके क्या उद्देश्य क्या थे ?
उत्तर – यह एक प्रकार की घोषणा हैं जिसे 1992 में ब्राजील के शहर रियों डी जेनरो में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन के तत्वाधान में राष्ट्राध्यक्षों द्वारा स्वीकृत किया गया । इसका उद्देश्य समान हितों , पारस्पारिक आवश्यकताओं एवं सम्मिलित जमीदारों के अनुसार विश्व सहयोग के द्वारा पर्यावरणीय क्षति , गरीबी और रोगों से निपटना है।
प्रश्न – संसाधन नियोजन का क्या अर्थ है ? संसाधन नियोजन के किन्हीं दो स्तरों का उल्लेख करो ।
उत्तर – **संसाधन नियोजन का अर्थ :–** संसाधन नियोजन एक तकनीक या कौशल है। जिसके द्वारा हम अपने संसाधनो का उचित प्रयोग कर सकते है। क्योंकि ये संसाधन सीमित हैं और हमारे देश में उनका वितरण भी असमान हैं । इसलिए संसाधनो के विकास के लिए संसाधन नियोजन अति आवश्यक हैं ।
संसाधन नियोजन के दो स्तर :–
(1) पहला स्तर हैं संसाधनो को ढूढ़ना जो एक बड़ी सीमित मात्रा में होते है और एक विस्तृत अनजान क्षेत्रों में फैले हुए है।
(2) संसाधन नियोजन का दूसरा स्तर यह है जब ऐसे संसाधनों को ढूढ़ कर उनसे अनेक प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया जाता हैं और विभिन्न प्रकार की संवायों को उपलब्ध कराया जाता है।

प्रश्न – भारत के किन राज्यो मे खनिजों और कोयले के प्रचुर भंडार है ?
उत्तर – झारखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ आदि राज्यो मे खनिजों और कोयले के प्रचुर भंडार है ।
प्रश्न – संसाधनो का संरक्षण हम किस प्रकार कर सकते है ?
उत्तर – संसाधनो का संरक्षण हम निम्नलिखित प्रकार कर सकते है :–
(1) ऊसर और दलदली भूमियों को कृषि योग्य बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए ।
(2) कारखानों के दूषित पानी को फिर से साफ करके बार बार प्रयोग में लाना चाहिए ।
(3) पर्वतों में वृक्षो। का अन्धाुन्ध काटा जाना बन्द होना चाहिए ।
(4) अयस्क के खनन करते समय तथा उससे माल तैयार करते समय होने वाली बरबादी को कम करने के प्रयत्न करना चाहिए ।
(5) रद्दी माल को फिर से प्रयोग में लाने की विधियाँ निकाली जानी चाहिये ।
(6) उपलब्ध खनिजों का प्रयोग बड़े ध्यान से किया जाए ओर जहा तक हो सके उनकी बचत की जाए ।
प्रश्न – संसाधन संरक्षण की वकालत कब और किसके द्वारा की गई ?
उत्तर – अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित तरीके से संसाधन संरक्षण की वकालत 1968 में क्लब ऑफ रोम ने की ।
प्रश्न – सकल कृषि क्षेत्र से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर – एक कृषि वर्ष में एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र को शुद्ध बोए गए क्षेत्र से जोड़ दिया जाता हैं तो वह सकल कृषि क्षेत्र कहलाता है।
प्रश्न – भारत के किन राज्यों में खनिजों और कोयले के प्रचुर भंडार हैं ?
उत्तर – झारखंड , मध्यप्रदेश और छतीसगढ़ आदि राज्यों में खनिजों और कोयले के प्रचुर भंडार हैं ।
प्रश्न – भू – संसाधनों का निम्नीकरण किस प्रकार से होता हैं ?
उत्तर – गैर कृषि परियोजनाओं में लगाई गई भूमि में बस्तियाँ , सड़के , रेल लाइन , उद्योग इत्यादि आते हैं । लंबे समय तक लगातार भूमि संरक्षण और प्रबंधन की अवहेलना करने एवं लगातार भू उपयोग के कारण संसाधनों का निम्नीकरण हो रहा हैं ।
प्रश्न – मानव क्रियाकलापों ने किस प्रकार भूमि के निम्नीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभई हैं ?
उत्तर – कुछ मानव क्रियाओं जैसे वनोन्मूलन , अति पशुचारण , खनन ने भी भूमि के निम्नीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं ।
प्रश्न – कौन से राज्य अभी भी वनोन्मूलन भूमि निम्नीकरण का कारण बने हुए हैं ?
उत्तर – झारखंड , छत्तीसगढ़ , मध्यप्रदेश और उड़ीसा ।
प्रश्न – भारत में कौन कौन से राज्यों में अति पशुचारण भूमि निम्नीकरण का कारण बनी हुई हैं ? ,
उत्तर – गुजरात , राजस्थान , मध्यप्रदेश और महीराष्ट्र ।

Downloaded from: http://www.atpeducation.com/cbse-download.php Email: atpeducations@gmail.com

प्रश्न – भारत में कौन कौन से राज्यों में अधिक सिंचाई भूमि निम्नीकरण का कारण बनी हुई हैं ?
उत्तर – पंजाब , हरियाणा , और उतरप्रदेश ।
प्रश्न – भूमि निम्नीकरण की सम्सयाओं को सुलझाने के कौन कौन से तरीके हैं ?
उत्तर – भूमि निम्नीकरण की सम्सयाओं को सुलझाने के निम्नलिखित तरीके हैं :–
1. वनारोपण और चरागाहों का उचित प्रबंधन ।
2. पेड़ो की रक्षा ।
3. पशुचारण नियंत्रण ।
4. रेतीली टीलों को काँटेदार झाड़ियाँ लगाकर स्थिर बनाने की प्रक्रिया से भी भूमि की रोकथाम रोकी जा सकती है।

प्रश्न – मृदा बनने की क्रिया में कौन कौन से कारक शामिल हैं ?
उत्तर – मृदा बनने की क्रिया में उच्चावच , जनक शैल , अथवा समंस्तर शैल , जलवायु , और वनस्पति जगत और अन्य पदार्थ और समय मुख्य कारक हैं ।
प्रश्न – आयु के आधार पर जलोढ़ मृदा कितने प्रकार की होती हैं ?
उत्तर – आयु के आधार पर जलोढ़ मृदा दो प्रकार की होती हैं :–
1. पुराना जलोढ (बांगर)
2. नया जलोढ (खादर) .

प्रश्न – मृदा का निर्माण किस प्रकार होता हैं ?
उत्तर – मृदा के निर्माण और उसकी उवरता के विकास के लिए कई कारक उत्तरदायी होते हैं ।
1. सबसे पहला कारक शैल हैं जिनसे मृदा के लिए उचित सामग्री मिलती है ।
2. दूसरी कीरक जलवायु हैं जो उन शैलों को एक लंबी अवधि में छोटे छोटे टुकड़ो और कणों में बदल देती हैं ।
3. तीसरी कारक , पेड़–पेड़ो हैं जो उन शैलों में घुसकर अपनी जड़ों से इन्हें तोड़ फोड देते हैं ।
4. चौथा , पशु भी निरन्तर अपने चरने की क्रिया से इन शैलों में अधिक परिवर्तन ला देते हैं ।
5. ऊँचाई और निरन्तर होने वाली वर्ष भी इन शैलों के छिद्रों में घुसकर तोड़ फोड का कार्य करती है।

प्रश्न – जलोढ़ मृदा का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।
उत्तर – जलोढ़ मृदा विस्तृत रूप से फैली हुई हैं और यह देश की महत्वपूर्ण मृदा हैं । वास्तव में संपूर्ण उतरी मैदान जलोढ़ मृदा से बना हैं । यह मृदा हिमालय की तीन महत्वपूर्ण नदी तंत्रो सिंधु , गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाए गए निक्षेपों से मिलकर बनी है । ये मृदाएँ राजस्थान और गुजरात तक फैली हुई हैं । पूर्वी तटीय मैदान, विशेषकर महानदी , गोदावरी , कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टे भी जलोढ़ मृदा से बना हैं ।

जलोढ़ मृदा में रेत , सिल्ट और मृतिका के विभिन्न अनुपात में पाए जाते हैं । जलोढ़ मृदाएँ पर्वतों की तलहटी पर बने मैदानों जैसे द्वार , में आमतौर पर पाए जाते हैं । जलोढ़ मृदाएँ बहुत ऊपजाऊ होती हैं । जलोढ़ मृदाएँ पोटाश , फास्फोरस और चुनायुक्त होती हैं जो इनको गन्ने , चावल, गेहूँ और अन्य अनाजों और दलहन फसलों के लिए उपयुक्त होती हैं । अधिक उपजाऊपन के कारण जलोढ़ मृदा वाले क्षेत्रों में गहन कृषि की जाती हैं ।

प्रश्न – काली मृदा की चार विशेषताएँ लिखो ।
उत्तर – काली मृदा की चार विशेषताएँ निम्न लिखित हैं :–
1. इनमें नमी धारण करने की क्षमता बहुत अधिक होती हैं ।
2. काली मृदा कपास के खेती के लिए उचित समझी जाती हैं ।
3. इसमें कैल्शियम कार्बोनेट , मैग्नीशियम , पोटाश और चूने जैसे पौष्टिक तत्वों से परिपूर्ण होती है।
4. यह मृदा बहुत उपजाऊ होती हैं ।

प्रश्न – काली मृदाएँ कहाँ पाई जाती हैं ?
उत्तर – काली मृदाएँ महाराष्ट्र , मालवा , मध्यप्रदेश , गुजरात और छत्तीसगढ़ में पाई जाती हैं ।

प्रश्न – लाल मृदा का रंग लाल क्यों होता हैं ?
उत्तर – लाल मृदाओं का रंग रवेदार आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में लौह धातु के प्रसार के कारण होता हैं ।

प्रश्न – लाल मृदाएँ कहाँ पाई जाती हैं ?
उत्तर – लाल मृदा दक्कन पठार के पूर्वी और दक्षिणी हिस्सों में रवेदार आग्नेय चट्टानों पर कम वर्ष वाले भागो में पाई जाती हैं तथा उड़ीसा , छत्तीसगढ़ , मध्यगंगा मैदान के दक्षिणी छोर पर और पश्चिमी घाट में पहाड़ी पद पर पाई जाती हैं ।

प्रश्न – पीला मृदा का रंग पीला किस कारण होता हैं ?
उत्तर – पीली मृदाओं का रंग पीला इनमें जलयोजन के कारण होता हैं ।

Downloaded from: http://www.atpeducation.com/cbse-download.php Email: atpeducations@gmail.com

प्रश्न – लेटराइट मृदा की विशेषताएँ लिखो ।
उत्तर – लेटराइट मृदा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–
1. इन मृदाओं में ह्यमूस की मात्रा कम पाई जाती हैं ।
2. इन मृदाओं पर अधिक मात्रा में खाद और रासायनिक उर्वरक डाल कर खेती की जाती हैं ।

प्रश्न – लेटराइट मृदा कहाँ पाई जाती हैं ?
उत्तर – लेटराइट मृदाएँ मुख्य तौर पर केरल , कर्नाटक , और तमिलनाडु में पाई जाती हैं ।

प्रश्न – मरूस्थलीय मृदा की दो विशेषताएँ लिखो ।
उत्तर – मरूस्थलीय मृदा की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–
1. ये मृदाएँ आमतौर पर रेतीली और लवणीय होती हैं ।
2. इन मृदाओं में ह्यमूस की मात्रा कम पाई जाती हैं ।

प्रश्न – मृदा अपरदन किसे कहते हैं ?
उत्तर – मृदा के कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया को मृदा अपरदन कहते हैं ।

प्रश्न – अवनलिकाएँ किसे कहते हैं ?
उत्तर – बहता जल मृतिकायुंक्त मृदाओं को का मरूस्थलीय मृदाओं को काटते हुए गहरी वाहिकाएँ बनाता हैं , जिसे अवनलिकाएँ कहते हैं ।

प्रश्न – मृदा अपरदन की रोकथाम के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए ?
उत्तर – 1. वन रोपण – काफी मात्रा में पेड़–पौधो के लगाने से मृदा अपरदन की प्रक्रिया को रोकी जा सकता हैं ।
2. पर्वतीय ढालों पर सीढऋीदार खेती बनाकर अवनालिका अपरदन को रोका जा सकता है।
3. पर्वतीय ढालों पर बाँध बनाकर जल प्रवाह को समुचित ढ.गा से खेती के काम में लाया जा सकता हैं ।

प्रश्न – मृदा अपरदन किस प्रकार होती हैं ?
उत्तर – मृदा का अपरदन निम्नलिखित प्रकार से होता हैं :–
1. वनोन्मूलन और अति पशुचारण से भी मृदा का अपरदन होता हैं।
2. पवन द्वारा कई बार मृदा उड जाती हैं जिससे मृदा का अपरदन होता हैं।
3. कई बार जल विस्तृत क्षेत्र को ढके हुए ढाल के साथ नीचे की ओर बहता हैं । ऐसी स्थिति में क्षेत्र की ऊपरी मृदा घुलकर जल के साथ बह जाती हैं । इससे भी मृदा का अपरदन होता हैं ।
4. कृषि के गलत तरीकों से भी मृदा का अपरदन होता है ।

www.atpeducation.com

Downloaded from: http://www.atpeducation.com/cbse-download.php Email: atpeducations@gmail.com